Bhram Rishi KrishanDutt Ji Maharaj Patrika November 2011

।। ओ३म् ।।

विष्णु के रूप

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुण-गान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गान गया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड़ के मूल में प्रायः वह परमपिता-परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर बड़ा अध्ययन किया है और एक-एक वेद-मन्त्र को ले करके उन्होंने अपनी षोडश-कलाओं को जानने का प्रयास किया। आज के हमारे वैदिक साहित्य में अथवा वेद-मन्त्रों में जहाँ नाना प्रकार की वार्ताए प्रायः आती रहती हैं वहाँ एक वेद का मन्त्र आ रहा था **षोडश्चम ब्रह्मा वर्णस्सुतम् आत्माम् भूतम ब्रह्मा विष्णु।** वेद का मन्त्र यह कहता है कि हे मानव तू अपनी षोडश-कलाओं को जानने का प्रयास कर यदि तू अपने जीवन को महान और पवित्रता के आंगन में ले जाना चाहता है तो तुझे षोडश-कलाओं वाला बनना है और षोडश-कलाओं को जानने वाला ही विष्णु कहा जाता है। हमारे यहाँ वैदिक-साहित्य में विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द माने गये हैं, जैसे विष्णु नाम परमपिता-परमात्मा को माना गया है और विष्णु नाम माता का है और यज्ञोमयी-विष्णु क्योंकि यज्ञ का नाम भी विष्णु रूप माना गया है और यहां आत्मा का नाम भी विष्णु रूप में ही माना गया क्या यह आत्मा विष्णु है? जो प्रायः हमारे

प्रभु से विनय

हे प्रभु! वास्तव में हम आराधना के तो योग्य हैं ही नहीं क्योंकि जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार मुझे सदैव बाध्य करते रहते हैं। उनसे भी मैं पार होना चाहता हूँ। हे प्रभु! वास्तव में वह आपकी महिमा का गुण गान इतना नहीं गाने देते जितना गाना चाहिए। प्रभु! वास्तव में गाता हूँ, सूक्ष्म गाता हूँ। वाणी का प्रसार भी होता है परन्तु वह जो नाना जन्म-जन्मान्तरों के नाना अंकुर मल इत्यादि से अकृत उनसे मैं आपकी महिमा द्वारा दूर होना चाहता हूँ। यह नाना प्रकार के संस्कार बाध्य बन करके आपकी शरण में नहीं आने देते।

हे देव! हम यह चाहते हैं कि न तो हम सँसार में नास्तिक होना चाहते हैं और न आस्तिक ही बनना चाहते हैं। हम तो यह चाहते हैं कि हमारे जो नास्तिक और आस्तिक के मध्य में एक सीमा है वह भी हमसे नष्ट हो जाये, वह भी दूर चली जायें। हम वास्तव में आस्तिक भी नहीं होना चाहते, नास्तिक भी नहीं बनना चाहते, दुराचार और सदाचार भी नहीं चाहते। प्रभु चाहते क्या हैं कि दोनों के मध्य में जो एक सीमा है वह भी नष्ट हो जाये। क्योंकि आप इतने उदार हैं कि आपके द्वारा न तो मान है न अपमान है। न सदाचार आपको छू सकता है और न दुराचार आपको छू सकता है। प्रभु! आप तो सदैव एक रस रहते हो। ऐसे ही प्रभु! हम चाहते हैं कि हमारे मध्य से भी यह जो नाना प्रकार के हमें नष्ट करने के लिए क्षेत्र बने हुए हैं उनको हम नहीं चाहते, ऐसी हमारी कामना है। इसीलिए प्रभु! मैं आपको बारम्बार नमस्कार कर रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेव

(पुष्प संख्या 13 प्रवचन दिनाँक 1 नवम्बर 1969)

अंक : 472 समग्र अंक : 547
वर्ष : 40 समग्र वर्ष : 46

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद गुरुदेव	1
2.	विष्णु के रूप	पूज्यपाद गुरुदेव	3-17
3.	तप की महिमा	पूज्यपाद गुरुदेव	18-33
4.	भगवान् राम की प्रतिभा	पूज्यपाद गुरुदेव	34
5.	उत्तरायण	पूज्यपाद गुरुदेव	35-36
4.	उद्‌बोधन	पूज्यपाद गुरुदेव	37
6.	दान, सूचना इत्यादि	पूज्यपाद गुरुदेव	38-40

चतुर्वेद पारायण ब्रह्म-महायाग

परमपिता परमात्मा की अनुकम्प कृपा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के शुभ आर्शीवाद से श्री गांधी धाम समिति (पंजी.) प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी **दिनाँक 26 फरवरी 2012 से 4 मार्च 2012** तक चतुर्वेद पारायण ब्रह्म-महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा के प्रागंण में बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ आप सबके सहयोग से आयोजित कर रही है। अतः आप सभी अपने सम्बन्धियों व मित्रो सहित सम्मिलित होने की कृपा करें।

श्री गांधी धाम समिति (पंजी.)

में जो विद्याएँ हैं जो उसके गर्भ में निहित रहती हैं उन विद्याओं को जो धारण करने वाला उन विद्याओं को जानने वाले को मानो देखो मन्त्र द्रष्टा कहा जाता है, तो वह उस मन्त्र के द्रष्टा। जब मुनिवरों देखो माता कुन्ती के हृदय में यह विचार आया कि मैं अपने गर्भ से एक धर्मराज की आभा में मानों उसकी उपासना करना चाहती हूँ और मैं धर्मराज को जन्म देना चाहती हूँ तो माता के गर्भ-स्थल में जब शिशु विद्यमान हो गया तो माता बेटा दुर्वासा ऋषि के द्वार पर पहुँची और दुर्वासा से कहा हे प्रभु! मैं अपने गर्भ से धर्मात्मा, एक शिशु को जन्म देना चाहती हूँ। मेरे प्यारे देखों महात्मा दुर्वासा मुनि ने एक वेद-मंत्र का उदगीत गाया और वेद मन्त्र को कहा **धर्म प्रभाः धर्मं ब्रह्मे धारणाम् ब्रह्म श्रुतं देवत्वं ब्रह्मे।** हे देवी देखो धारणा में रत्त रहना मानो उसी को धर्म कहा जाता है और धर्म को जानना ही मानो देखो उस विद्या का तुम्हे अध्ययन करना है। मेरी प्यारी माता ने कहा मैं प्रिय ऐसा ही कर पाऊंगी। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है कि माता कुन्ती सदैव देखों दुर्वासा मुनि के मार्ग को दिये हुए वेद-मन्त्र का उच्चारण करने लगी और वह अपने प्राणों को जानने लगीं। मानो देखो प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करतीं। बेटा! देखो माता इस प्रकार का वेदों का मन, वचन, कर्म को ले करके वह इस प्रकार का अध्ययन किया गया तो बेटा देखो माता के गर्भ-स्थल से धर्मराज का जन्म हुआ। मानो जो धर्म को धारण करने वाला हो और **धर्म उसे कहते है** जिसकी प्रत्येक इन्द्रियां मानो देखो धर्म में पिरोई होनी चाहिए। धर्मम ब्रह्मा देखो आचार्यों ने कहा कि **धर्म कहते हैं** जो धारयामि, जो धारण किया जाता हो परन्तु धारयामि ब्रह्मे और भी ऊर्ध्वा गम्भीर एक मुद्रा में जब मनुष्य प्रवेश कर जाता है जब साधक बन जाता है प्रत्येक इन्द्रियों को मुनिवरो देखो वह धारयामि बनाता है। **प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है उन विषयों को विचारना और विचार करके मानो उसके अनुसार अपने जीवन को बनाने का नाम धर्म है।** जैसा बेटा

अन्तकरणीय आभा में रत्त रहने वाली है तो उसका नाम विष्णु कहा जाता है।

विष्णु की व्याख्या

तो आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा है **विष्णु ब्रह्मण व्रत्तम् देवा** हे विष्णु तू वास्तव में कल्याण कारक है और पालन करने वाला है। तो हमारे यहां वेद की आख्यायिकाओं में प्रायः इस प्रकार का वर्णन आता रहा है कि विष्णु नाम परमपिता-परमात्मा का है जो संसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है और वही विष्णु कहलाता है जो मानो अपनी आभा में रत्त रहने वाला है। विचार आता है कि विष्णु नाम जब गुणों का वर्णन आता है तो सतोगुण में ही विष्णु माना गया है और विष्णु को कहाँ है ध्रुवाम् विष्णु व्रणम् ब्रह्मा क्योंकि जितना पालना के मूल में आता है उस सर्वत्र का नाम विष्णु है और पालना के मूल में जहाँ परमपिता-परमात्मा सर्वोपरि हैं वहीं माता का नाम भी विष्णु कहा गया है और विष्णु नाम सूर्य को भी कहा गया है और यज्ञोमयी विष्णु क्योंकि यह भी पालन करने वाला है। तो जितना भी पालना के मूल में वाचीशब्द आते हैं वह सर्वत्र विष्णु कहलाते हैं क्योंकि वह ध्रुवा है। जब पालना का प्रसंग आता है तो मानव का ध्रुवा, ध्रुवा में वो गमन करने लगता है जैसे परमपिता-परमात्मा सत्यमयी ध्रुवा है। जैसे मानो देखों एक वृक्ष पर नाना प्रकार के फलों की जब उपलब्धियां होती हैं तो वह फल है क्योंकि वह वृक्ष पालना के मूल में रहता है तो उसका जो फूल है अमृतातयी मानों वह पालना विष्णु बरना है वह मानो उसमें पालना को प्राप्त करता वह भी नीचे को ध्रुवा में गति हो जाती है इसी प्रकार माता जब अपने बाल्य का पालन करती है तो उसकी ध्रुवा गति हो जाती है। वह ध्रुवा में नम्र बन जाता है। इसी प्रकार माता और पिता के रूप में मानो वह वर्णित होने लगता है। आचार्य कुल में ब्रह्मचारी अध्ययन करता है तो अध्ययन करता हुआ मानो वह भी देखो आचार्य ध्रुवा में रहता है क्योंकि वह पालना में और वह आचार्य अपनी ओजस्वी वाणी से ब्रहस्पति बन करके ही

मुनिवरों देखों वह ओजस्व उपदेश देता है और वह ब्रह्मचारी को कहता है ब्रह्मचारी! तू मृत्यु से पार हो जा जब तू मृत्यु से पार हो जायेगा तो मानो देखो मेरा जीवन सफलता को प्राप्त होगा।

तो मेरे पुत्रों! देखों आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है ध्रुवाम विष्णु ब्रह्मा ध्रुवाम देवम ब्रह्मा मेरे प्यारे देखों इसी प्रकार यज्ञोमयी ध्रुवा है यज्ञोमयी ध्रुवा विष्णु है मानों देखो जब हूत करने वाला जब हूत करता है तो वह सुगन्ध देता है तो पृथ्वी की आभा में मानो उसकी तलहटी में वो सुगन्ध रूप में ही मुनिवरो देखो वर्जित होने लगती है। तो विचार आता है कि विष्णु नाम पालन करने वाले का जो पालना करने वाला वही विष्णु है। तो आओ मुनिवरो देखों परमपिता-परमात्मा का नाम विष्णु है जो ध्रुवा में रत्त रहने वाला है। मेरे प्यारे देखो! वह परमात्मा हमारा सतोगुण में रत्त रहने वाला है और वह सतोगुण में पालन करने वाला है तो उसका नाम विष्णु है। हे विष्णु! तू अमृत है, तू मानों देखों अमृता कहलाता है और तू ध्रुवा में रमण करने वाला जिससे मानों तू पालना कर रहा है। तो यहाँ बेटा देखों परमात्मा का नाम विष्णु है और जहाँ परमात्मा का नाम विष्णु है वही माता का नाम भी विष्णु कहा जाता है। माता जब पालन कर रही है, तो मानों अपने बाल्य को लोरियों का पान कराती कहती है विष्णाम ब्रह्मा ध्रुवा हे बालक! मैं ध्रुवाम ब्रह्मे हे ब्रह्मचारी! मैं तेरा पालन करने के लिए तत्पर हूँ क्योंकि मैं ध्रुवा हूँ, मैं ध्रुवा बन गई हूँ। तो मेरे प्यारे देखों माता लोरियो का पान कराती रहती है और उस समय वह बाल्य को शिक्षा देती रहती है तो वह माता मानो देखों ध्रुवा में रत्त रह करके, वह विष्णु बन करके मुनिवरो देखो कल्याण-कारक है। मेरे प्यारे देखों वहीं माता संतोगुण में पालना कर रही है, वही माता रजोगुण में अनुशासन कर रही है और वहीं माता तमोगुण में बेटा पालना मानो देखों वही उत्पत्ति के मूल में विद्यमान रहती है। हमारे यहाँ आचार्यों ने प्रकृति के समूल में मानों तीन प्रकार के गुणों का व्यवधान किया है। सबसे प्रथम सतोगुण कहलाता है उसके पश्चात रजोगुण और तमोगुण में मानो

देखों अमृत है। रजोगुण में मेरे प्यारे देखों वह अनुशासन है जब राजा अपनी राजस्थली पर विद्यमान होता है तो वह अनुशासन करता है और अनुशासन ऐसा करता है कि वह अनुशासन में रत्त हो करके वह अपने में मानो देखों अपने को ही जानने लगता है। मेरे प्यारे! देखों इसी प्रकार माता जब बाल्य पर अनुशासन करती है, अनुशासित होती है तो ब्रह्मचारी, मुनिवरो देखों अपनी मम ब्रह्मा वह उसकी पालना में रत्त हो जाता है और ब्रह्मचारी क्योंकि रजोगुण में अनुशासन है। यदि माता अपने ब्रह्मचारी बाल्य को अनुशासन की शिक्षा नहीं देती तो माता मानों देखों वह अपने में, अपने कार्यों में अधूरेपन में रत्त रहने वाली है। मेरे पुत्रों! देखों वही माता रजोगुण में जैसे राजा अपने राष्ट्र का पालन करने वाला है और राजा जब अपने राष्ट्र का पालन करता है तो मानों देखों वह अनुशासित हो जाता है, स्वयं अनुशासित होता है और प्रजा को, अपने को अनुशासन में लाता है जैसे माता अपने पुत्र को अनुशासन में लाने वाली है। इसी प्रकार उत्पत्ति के मूल में मेरे प्यारे देखों माता के गर्भ-स्थल में शिशु विद्यमान है और माता उसे शिक्षा देती रहती है, प्राणों की पुठ लगाती रहती है मानो इस प्रकार की विद्या माता के द्वारा होनी चाहिए। जिस विद्या को पान करने वाला अपने में महानता को प्राप्त होता है।

माता का कर्त्तव्य

मेरे पुत्रों! जब मैं देखों द्वापर के काल में प्रवेश करता हूँ तो उस समय मुझे मानों देखो माताओं का कर्त्तव्य स्मरण आने लगता है। मैं आज प्रत्येक अमृतों में नहीं जाना चाहता हूँ। माता कुन्ती के जीवन में यह प्रायः उनके जीवन में देखों यह विद्याएँ रही हैं। जिस विद्या को धारण करने के पश्चात् महर्षि दुर्वासा मुनि मन्त्रों के द्रष्टा कहलाते थे। मुझे बेटा! महर्षि दुर्वासा मुनि का जीवन जब स्मरण आने लगता है तो मानो देखो हृदय भी गद-गद हो जाता है। क्या वह मन्त्र द्रष्टा कहलाते थे और मन्त्र द्रष्टा वह होता है जो देखों वह एक वेद-मन्त्र

देखो जब महर्षि पिप्पलाद मुनि के द्वारा जिज्ञासु जाते हैं तो वह कहते हैं कि अमृतम क्या हम ब्रह्म को जानना चाहते हैं तो आचार्य ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम गऊओं की सेवा करो एक वर्ष तक। तो मानों देखों जहाँ प्रसंग यह आता है कि धर्मम ब्रह्मा ईश्वरम ब्रहे जहां ईश्वर को जानने की उत्सुकता आती है, जहाँ ज्ञान और विज्ञान को जानने का प्रसंग आता है वहाँ इन्द्रियों का, इन्द्रियों को पशु कहा जाता है, गो कहा जाता है। तो गऊ के अमृत मानो देखों उसको धारयामि बना करके ब्रह्मचारियों ने ब्रह्म जिज्ञासुओं ने बेटा शान्त एक वर्ष तक गऊओं की सेवा की। गऊओं का अभिप्रायः यह है कि प्रत्येक इन्द्री का नाम गऊ है। गौ कहते हैं जो धारयामि मानो जो पशु के तुल्य है मानो जो गति करने वाली मन के अनुसार गति करती है और जहां मन और इन्द्रियों को जब एकाग्र किया जाता है तो मानो देखो वह मानव अपनी इन्द्रियों को संयम में ला करके उसका नाम धर्म है। **प्रत्येक इन्द्री को जानने का नाम ही धर्म कहा जाता है।** तो यह बेटा, यह देखो अमृतम माता कुन्ती अपने में इस प्रकार के धर्म को जानने लगी तो बेटा उनके गर्भ से धर्म-राज का जन्म हुआ। इसी प्रकार उन्होंने बेटा कहीं महाराजा इन्द्र से इन्द्र वाची मन्त्रों को लिया, कहीं अश्विनी कुमार वाची मन्त्रों को लिया, कहीं वायु मानो देखों पवन वाची मन्त्रों को लिया और इसी प्रकार उन्होंने मानो देखो अपनी सन्तान को जन्म देने का प्रयास किया।

तो मेरे प्यारे देखों मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल यह क्या मानो देखों यह तीन गुण कहलाते हैं। सबसे प्रथम सतोगुण है जिसमें विष्णु रहता है रजोगुण में मानो देखों अनुशासन रहता है, अनुशासन में जब माता अपने पुत्र को ला देती है तो वह अनुशासित हो जाती है। हे माता तुझे वेद ने मानो देखों शिव के रूप में वर्णन किया है तुझे मानो देखों वह रजोगुण में अप्रत किया है और तमोगुण के गर्भ में बेटा देखो उत्पत्ति का मूल हैं इसमें भी सतोगुण, रजोगुण विद्यमान रहता है। तो मेरे प्यारे देखों यह तीन मनके हैं और तीनों मनके एक दूसरे के पूरक कहलाए गये हैं मानों देखों वहीं रजोगुण

द्वारा मानो देखो किसी वस्तु को अपने अधीन करता है अपने में समन कर लेता है। तो इसी प्रकार मुनिवरो देखो वह अमृतम हमारे आचार्यों ने बेटा देखों प्राण, अपान और उदान को जान करके नाग प्राण की पुट लगा करके ही मेरे प्यारे देखों प्राण और अपान को एकाग्र करते हुए और व्यान को उसमें पुट लगाते हुए सबसे प्रथम वह मानो देखो वह मूलाधार में जाती है और मूलाधार में जहाँ नाना प्रकार के चक्रों का वर्णन आता है। जब मूलाधार में पहुँचे तो उसके ऊपर ले भाग में मानों नाभिचक्र कहलाता है और नाभिचक्र में जब यह आत्माम ब्रह्मे मन के सहित बेटा देखो अपने में विचरने लगती है तो वहाँ मानव को इस पृथ्वी-मण्डल का ज्ञान हो जाता है। मानो उसी प्रकार जब योगेश्वर आगे परणित होता है तो हृदय चक्र में प्रवेश करता है जहाँ यह परमात्मा का जो जगत है यह हृदय है मानो इसमें र्भू, भुवः स्वः यह तीन व्याहृतियाँ लगा करके मुनिवरो देखो यह मानों देखो तीन मण्डलों का स्वामी बन जाता है और यह आत्मा जब मुनिवरो कण्ठ-चक्र में जाता है तो जितना भी शब्द-विज्ञान है चाहे वह अन्तरिक्ष में रमण करने वाला हो किसी भी रूप में हो परन्तु देखों उसकी प्रतिभा उसे व्यापने लगती है और व्याप करके मुनिवरो देखों उसमें वह रत्त हो जाता है तो कण्ठ-चक्र में मेरे प्यारे देखो लोकलोकान्तरों का ज्ञान प्रारम्भ हो जाता है और लोको में कौन-कौन सा-लोक कितना विशाल है इसका ज्ञान होने लगता है परन्तु इसी प्रकार जब वह घ्राण चक्र में जाता है तो वायु मण्डल में वायु मण्डल कैसे गति कराता है परमाणुओं को कैसे लोको का भ्रमण कराता रहता है अग्नि की धाराओं को ले करके मेरे पुत्रों देखो वहाँ यह ज्ञान होता है। जब यह त्रिवेणी के स्थान में जाता है तो इंगला, पिंगला सुषुम्ना यह तीन प्रकार की नाडियां कहलाती हैं जो रीढ़ के साथ में रमण करती हुई मानों देखो हृदय चक्र को गमन करती हुई जब मुनिवरो देखों यह त्रिवेणी में प्रवेश करती हैं एक स्थान से देखों इंगला चलती है एक स्थान से पिंगला चलती है और सुषुम्ना इनके मध्य में विद्यमान हो करके बेटा देखो योगी जब त्रिवेणी का स्नान

है, वही सतोगुण है और वही तमोगुण माना गया है, एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो इस प्रकार वेद का आचार्य कहता है कि अमृतम हे विष्णु तू पालना के मूल में विद्यमान है। हे माता जहां परमात्मा का नाम वाची विष्णु आता है वहीं माता तेरा नाम भी मानों देखो विष्णु के रूप में वर्णन किया गया है। तू वास्तव में विष्णु है पालन करने वाला है।

आत्मा का नाम विष्णु

तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब वेद का आचार्य, वेद का मन्त्र इस प्रकार के मन्त्रों का उदगीत गाता है तो वह कहता है क्या विष्णु नाम जहाँ मुनिवरो देखों माता का नाम विष्णु है, परमात्मा का नाम विष्णु है वहाँ मुनिवरो देखो आत्मा का नाम भी विष्णु माना गया है। जब तक आत्मा इस शरीर में विद्यमान है तो यह चेतनामयी बनी हुई है और यह चेतन मानव का शरीर चेतनित रहता है जब यह शरीर से पृथक हो जाता है तो मानव का यह शव मानो देखों चेतना शून्य हो जाता है। तो चेतना शून्य होने से मानो देखो इसलिए आत्मा का नाम वेद ने कहा आत्माम विष्णु ब्रह्मेण वृतम देवा क्या यह आत्मा विष्णु कहलाता है। मेरे पुत्र महानन्द जी ने एक समय मुझे वर्णन करते हुए कहा था, उन्होंने कहा कि **विष्णु तो अक्षय-क्षीर सागर में रहता है** और लक्ष्मी चरणों की वन्दना करती रहती है। तो मानों देखों गन्धर्व अपनी गान-गाने लगता है नारद अपनी वीणा को ले करके मानों देखो अपने में शान्त हो जाता है। तो विचार आता है बेटा यह लोलुक्तियाँ कहलाती हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में नाना प्रकार की लोलुक्तियाँ मानी गई हैं। जहाँ मुनिवरो देखों वेद-मन्त्र आता है वहां लोलुक्तियाँ आती हैं वहां और भी नाना प्रकार का एक नृत होने लगता है। तो मेरे प्यारे देखों वेद कहता है विष्णुम ब्रह्मा आत्माम यह **आत्मा अक्षय-क्षीर सागर में रहता है** आत्मा के कारण ही मानो यह शरीर चेतना बद्ध रहता है। आत्मा इस शरीर से जब निकल जाता है तो

चेतना शून्य हो जाता है। कहते हैं जब वेद का मन्त्र कहता है आक्षाम् भूतम विष्णु वर्णनम् देवा क्या यह मानों देखो **अक्षय-क्षीर सागर नाम मेरे प्यारे देखो ज्ञान और विवेक के सागर को कहा जाता है।** जब यह आत्मा ज्ञान और विवेक में परणित हो जाता है तो उस समय यह अक्षय-क्षीर सागर में चला जाता है। अक्षय क्षीर सागर कहते हैं बेटा ज्ञान और विज्ञान के मार्ग को, ज्ञान और विज्ञान में जब यह आत्मा प्रवेश कर जाता है तो उस समय मुनिवरो देखों अपनी साम्यावस्था में परणित हो जाता है। तो जब यह आत्मा साम्यावस्था में चला जाता है आत्मा के कारण ही मानो देखों यह मन अपने क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है और यह मन बेटा देखों हमारे यहाँ वेद के आचार्यों ने साहित्यकारों ने इस **मन को नारद कहा है** क्योंकि नारद अपनी चंचल रूपी वीणा को ले करके यह आत्मा के समीप आ जाता है क्योंकि आत्माम भूतम ब्रह्मे व्रता। मेरे प्यारे! देखों जब यह आत्माम ब्रह्मा ब्रव्हे नारद अपनी चंचलतता को त्याग करके कहता है प्रभु मैं आपकी शरणागत हूँ मानों देखो **यह मन अपने विज्ञान में आत्मा के प्रकाश से ही तो प्रकाशित होता है।** तो मेरे प्यारे देखों आत्माम ब्रह्मे और गन्धर्व जो गान-गाने वाला जो बुद्धि है वह भी मुनिवरो देखो बुद्धि चलायमान न रह करके वह भी चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है। मेरे प्यारे देखो गन्धर्व अपने गान-गाने में असमर्थ हो जाता है नारद अपनी वीणा से असमर्थ हो गया है। इन्द्रियां मुनिवरो देखों अपने-अपने अव्ययों में परणित हो जाती हैं तो **यहां आत्मा का नाम विष्णु है।**

योग

मेरे प्यारे! देखों जब साधक अपने में साधना करने लगता है तो साधना के क्षेत्र में जाता है। मेरे प्यारे देखों हमारे यहाँ यौगिक प्रक्रियाओं में दो प्रकार के योगों में प्राणी परम्परागतों से जाता रहा है एक मानो देखो ध्यानावस्था के रूप में परणित होता है और दूसरा उसका जो मार्ग है वह मानो देखो अपने हठते योगम् ब्रह्मा ज्ञान के

चाहे वह योग की प्रतिक्रिया में हों चाहे वह मानो सुगन्ध की प्रतिक्रिया में हों चाहे वेद-मन्त्रों के उच्चारण करने में स्वाह की ध्वनि आ रही हो यह सर्वत्र मुनिवरो एक कर्तव्यवाद में निहित रहा है और उन सर्वत्र का नाम विष्णु कहा जाता है।

अक्षय क्षीर-सागर

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल यह आत्माम विष्णु देखों हम विष्णु की उपासना करें और विष्णु को जानने का प्रयास करें बेटा जो अक्ष्य क्षीर सागर में वास करने वाला है। **अक्षय क्षीर-सागर नाम ज्ञान को कहा जाता है और ज्ञान के सागर में आत्मा विद्यमान रहता है।** जो आत्मा आत्मवेत्ता बन करके बेटा विवेक के सागर में प्रवेश करता है बेटा! वहाँ लक्ष्मी उसके चरणो की वंदना करती है गन्धर्व गान-गाने लगता है और नारद अपनी चंचलता को त्याग करके उसके चरणों में बद्ध हो जाता है। विचार आता रहता है वह विष्णु है जो अक्षय क्षीर-सागर में रहता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ, विचार-विनिमय केवल यह कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुण-गान गाते हुए इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करें।

सत्यकाम की तपस्या

बेटा! मैं आज उच्चारण कर रहा था वेद-मन्त्र आ रहा था षोडश-कलाओं के सम्बन्ध में। षोडशचम् ब्रह्मा देखो व्रते मानो देखों षोडश-कलाओं को जानना चाहिए। बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब सत्यकाम अपनी माता से कहता है हे माता! मै तपस्या करने जा रहा हूँ मुझे आज्ञा दीजिए। माता देखो, माता ने कहा, माता जाबाला ने कहा हे पुत्रो! ब्रह्मणे वर्णस्सुतम् मानो तुम इस विद्या को पा नहीं सकोगे। सत्यकाम ने कहा माता क्यों नहीं पा सकूंगा? क्योंकि आचार्य तुमसे तुम्हारा परिचय लेंगे तुम्हारा कोई परिचय नहीं है। उस समय कहा मैं प्रभु का पुत्र हूँ, मैं, प्रभु ने मेरा निर्माण किया है आत्माम

करता है और जब त्रिवेणी का स्नान करता है तो वहां मेरे प्यारे देखों गंगा, यमुना, सरस्वती इन तीनों का ज्ञान होता है। गंगा, यमुना और सरस्वती मानों सरस्वती कहते हैं विद्याम भूतम मानो जिसके मंडल में जो-जो विद्या विद्यमान है उसका ज्ञान होना और लोकलोकान्तरों में रमण करना मानो देखो यह त्रिवेणी के ऊपरले स्थान में त्रिर्कटी मानों त्रिवंट कहलाता है जिसको मुनिवरो देखो हम त्रिजटा कहते हैं, तिवर्ण कहते हैं, मानो देखो वहां तीन प्रकार की चित्त स्थितियाँ होती हैं। जब इनकी स्वर ध्वनि आनी प्रारम्भ होती है तो मेरे प्यारे अन्तरिक्ष में रमण करने लगते हैं। जब अन्तरिक्ष में प्रवेश हो जाते हैं तो अन्तरिक्ष में कैसे-कैसे लोक-लोकान्तर गमन करते हैं तो मानो देखो वहाँ यह प्रवेश करता है। यह ब्रह्मरन्ध्र में जा करके बेटा सर्वत्र ब्रह्माण्ड का जो लोक-लोकान्तरों का एक मण्डल बना हुआ है नाना प्रकार से मानव देखो उसको जानने लगता है। भली-भांति बेटा देखो वह त्रिवेणम ब्रहा वही तो ब्रह्मरन्ध्र कहलाता है जहां ब्रह्मरन्ध्र में बेटा देखों यह ब्रह्माण्ड एक दूसरे की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। तो आओ बेटा मैं तुम्हें यौगिक क्षेत्र में नहीं ले जाना चाहता हूँ केवल यह कि यह हमारे यहां हटयोग प्रतीक मानी मानो इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान का वर्णन है। महर्षि पतञ्जलि जी ने भी किया है इसी विज्ञान को देखो आदि ब्रह्मा ने भी इस प्रकार वर्णन किया है परन्तु देखो उसको और भी नाना ऋषियों ने इसके ऊपर अन्वेषण किया है। आज मैं इसके ऊपर विशेष विचार देना नहीं चाहता हूँ। यह तो व्याख्या की प्रतिभा है मैं तो केवल तुम्हे परिचय कराने के लिए आया हूँ। विचार विनिमय यह मुनिवरो देखों आत्मा का नाम विष्णु है आत्मा प्राणो के साथ में मानों देखो गमन करता है एक दूसरे में धुक धुकी दे करके विज्ञानवेत्ता मृत्यु से पार होने का प्रयास करता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। केवल यह क्या मुनिवरो देखो वेद का ऋषि कहता है विष्णुम ब्रह्मा आत्माम भूतम ब्रह्मे लोकामा हे आत्मा तू विष्णु है, हे आत्मा तू मानो

देखो विष्णु उस समय कहलाता है जब तू मानो देखो यौगिक प्रतिक्रियाओं में प्रत्येक चक्र के विज्ञानवेत्ता और विज्ञान में तू रत्त हो जाएगा। मानो उन क्रियाकलापो को तू साक्षात्कार दृष्टिपात करेगा तो तेरा नाम विष्णु है क्योंकि विष्णु वेद के प्रकाश को जानने वाला है। **वेद के मर्म को जानने वाले का नाम ही विष्णु कहा जाता है।** मेरे पुत्रो देखों मुझे नाना वार्ताए स्मरण आती रहती हैं आज का विचार विनिमय केवल विशेष नहीं विचार केवल यह कि मुनिवरो देखों **आत्मा का नाम विष्णु है।** हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हे आत्मा जब तक तू शरीर में विद्यमान है मानो हे विष्णु उस समय मानव चेतनित रहता है उस समय माता रहती है, पिता रहता है और पुत्र रहता है परन्तु पुत्रियाँ रहती हैं, आचार्यजन रहते हैं यह संसार मानो एक प्रतिभा में दृष्टिपात आने लगता है और जब यह आत्मा निकल जाता है तो बेटा नेत्र अपने प्रकाश से वंचित हो जाता है मानो देखों घ्राण अपनी सुगन्ध से वंचित हो जाता है और मुनिवरो देखों हस्त अपने क्रिया कलापों से वंचित है और वाणी मुनिवरो देखों वाक-शक्ति से वंचित हो जाता है। इसी प्रकार घ्राण देखो सुगन्धम ब्रह्मा व्रतम मानो देखों रसना अपने आहार से वंचित हो जाता है। तो विचार आता है बेटा आत्मा ही प्रकाश का मूल है। **आत्मा को जानना ही विष्णु बनना है** और विष्णु बन करके मुनिवरो देखो अपने आत्म कल्याण को प्राप्त करना है। आज मैं बेटा तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया क्योंकि वेद का मन्त्र कुछ इस प्रकार की वार्ताएं प्रगट कर रहा है। तो मेरे प्यारे देखो यहाँ आत्मा का नाम विष्णु है परमात्माम भूअम वणम् मानो देखो वहीं तो संसार का नेतृत्व करने वाला है। तो आओ मेरे प्यारे जहां विष्णु नाम परमात्मा का है वहाँ विष्णु नाम माता का है जहाँ माता का नाम विष्णु है बेटा वहीं मानो देखो यहां आत्माम भूतम आत्मा का नाम विष्णु है और जहां आत्मा का नाम विष्णु है वहां सूर्य का नाम भी विष्णु कहा जाता है। विष्णु प्रातः काल में उदय होता है और प्रकाश को ले करके आता है वह मानो देखों नाना प्रकार की भग रूपी किरणों

से प्रकाश में मानव को रत्त कर लेता है माता अपने पुत्रों को जागरूक कर लेती है। हे बाल्य! जागरूक हो जाओ यह सूर्य उदय हो गया है, विष्णु आ गया है प्रकाश ले करके, नेत्रों का देवता बन करके आता है। मानो विज्ञान का समूह बन करके आता है नाना प्रकार की वनस्पतियों के जनजीवन को ले करके आ रहा है। तो मेरे प्यारे देखों वह प्रकाश जो ओजस्व है जो नाना प्रकार की ऊर्जा को देने वाला है वह ओजस बनाने वाला है। तो विचार आता है बेटा वह पालना करता है कहीं मानो देखों नाना प्रकार की किरणों के द्वारा कहीं ऊषा नाम की किरण के द्वारा पालना करता है कहीं कान्ति नाम की किरण के द्वारा पालना करता है, कहीं मानो देखों वह आवहनीय नाम की अग्नि की ऊर्जा दे करके मानव को अपने में प्रवेश कराता है। तो विचार आता है कहीं वनस्पतियों को जन जीवन देता है। ये वनस्पति जब परिपक्व होती हैं तो मानव का आहार बन जाती हैं। तो विचार आता है बेटा देखो विष्णु नाम सूर्य का है। आचार्यों ने उसे अदिति कहा है और वह अदिति के रूप में विद्यमान रहता है। हे मानव तू मानों देखों विष्णु की उपासना कर उपासना करने वाला ही उपास्य कहलाता है। वहीं तो विष्णु रूप में रत्त रहने वाला यज्ञोमयी-विष्णु यजमान अपनी यज्ञशाला में याग करता है, कहता है हे यज्ञस्वरूप तू विष्णु है तू पालना करने वाला है जैसे मानों माता ने मेरी देखो विष्णु बन करके मेरी पालना की है परमात्मा जिस प्रकार मेरी पालना कर रहा है नाना प्रकार की ऊर्ज्जा दे करके, नाना प्रकार की प्रतिभा दे करके मुझे प्रतिभाशाली बना रहा है इसी प्रकार अमृतम ब्रह्मा तू अमृत के देने वाला है आ तू मुझे मानो प्रकाश में ले चल। मेरे प्यारे देखो आत्माम भूतम ब्रह्मा वस्तुतम यज्ञम ब्रह्मा देखों यज्ञ, जितना भी संसार का सुक्रियाकलाप है आत्मा से जिस क्रिया का सम्बन्ध रहता है उसी का नाम विष्णु कहा जाता है और वहीं याग है जितना भी सुक्रियाकलाप है कर्तव्यवाद में रत्त करने वाला वहीं तो मानो अमृता कहलाता है वहीं विष्णु है और वहीं याग कहलाता है। जितने भी संसार के सुकर्म हैं आत्मा से सम्बन्धित हैं

सूक्तों के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ करता है और इसी प्रकार **विष्णु-सूक्त** हैं और ब्रह्म का निर्णय देने वाला ब्रह्म के ऊपर **ब्रह्म-सूक्तों** का वर्णन करता है और इन्द्र के ऊपर विचार-विनिमय करने वाला मानव **इन्द्र-सूक्तों** का वर्णन करता रहता है। **अग्नि-सूक्तों** का भी वर्णन प्रायः हमारे वैदिक-साहित्य में होता रहा है। बेटा! मैं इन नाना प्रकार के सूक्तों में तो जाना नहीं चाहता हूँ केवल आज तो मैं तप की महिमा का वर्णन करने के लिए आया हूँ कि तपों ब्रह्मणा व्रतम, वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू तपो में निष्ठ हो जा और तप में अपने को ले जा क्योंकि तपो वर्णस्सुतम मानो जब तप की महिमा का वर्णन आता है तो वहाँ उत्तर और प्रश्न भी आते हैं। एक वेदमन्त्र में कहा तपो वर्णन बहु वर्णस्सतुम तपा वेद का मन्त्र कहता है कि तप क्या है? जब तप की महिमा का इतना विशाल वर्णन है, उसी वेद-मन्त्र में बेटा! उसके उत्तर के रूप में कहता है तपाम भूतम प्रव्हे अस्वति देवा वेद का मन्त्र कहता है कि **पन्च-महाभूतों को जानना और पन्च-महाभूतों का उपयोग करना उसका नाम तप है।** बड़ी विशालता का वर्णन करते हुए ऋषियों ने कहा है कि पन्च-महाभूतों का वर्णन करना ही तप माना गया है। पन्च-महाभूतों में बेटा! अग्नि का चयन होता रहा है में वहीं आपोमयी ज्योति का चयन होता रहा है में वहीं वायुमयी गतिवान बनाने के लिए इसका चयन होता रहा है और पिण्डम भूतम पिण्डो वर्णन वरणीय निर्माण और पिण्डो का निर्माण करने वाला जो गुरुत्व मूल रूप में मानों उसके ऊपर जो विचार-विनिमय करता है पन्च-महाभूतों की प्रवृत्तियों को जान करके तपों में प्रवेश हो जाता है। तो बेटा! देखो तप की विवेचना करते हुए आदि आचार्यों ने यह कहा है कि हमारी इन्द्रियों का जो चयन होता रहा है, इन्द्रियों में जो एक मानो विषयवासम कृति नाना प्रकार के अवरूद्ध माने गये हैं, उनको जानने का नाम ही तप है।

मेरे प्यारे! देखो तप में ब्रह्म अन्नाम् भूतम् आगे वेद का ऋषि कहता है कि **अन्न को पवित्र बनाना ही तप है** क्योंकि हमारे यहाँ

भूतम **आत्मा ज्योति है** मैं उसको जानने का प्रयास करूँगा। बेटा देखो सत्यकाम माता की आज्ञा पा करके महर्षि गौतम के द्वार पर जाते हैं और महर्षि गौतम ने कहा आईये ब्रह्मचारी। बेटा ब्रह्मचारी से प्रश्न किया सांयकाल को ब्रह्मचारी तुम्हारा गोत्र क्या है? उसने कहा मैं नहीं जानता मेरा गोत्र क्या है। उन्होंने कहा गोत्राम ब्रह्मा आत्माम भूतम। मेरा ब्रह्मात्मा ही मेरा गोत्र है मानो देखों माता ने कहा कि मैं तुम्हारे गोत्र को नहीं जानती। मेरे पुत्रों देखो गौतम ने कहा ब्रह्मचारी तुम ब्राह्मण हो क्योंकि ब्राह्मण ही सत्यवादी कहलाता है जो ब्रह्म-विद्या को जानने वाला है। मेरे प्यारे देखो उन्होंने सत्य कह करके शान्त हो गये। रात्रि का समय हो गया ब्रह्मर्षि देखो अपने में चिन्तन करने लगा तुमने ब्रह्मचारी को देखो ब्राह्मण कहा, यह है या नहीं इसकी तुमने कोई परीक्षा नहीं ली परन्तु उसके एक शब्द उच्चारण करने पे तुमने ब्राह्मण की उपाधि प्रदान की है। मेरे प्यारे देखो! वह गौतम अपने में चिन्तन करने लगा। चिन्तन करते-करते रात्रि समाप्त हो गई। प्रातः काल होते ही सत्यकाम उनके द्वार पर। सत्यकाम ने चरणों की वदना की और चरणों की वन्दना करके कहा प्रभु! मुझे तो आज्ञा दीजिए। उन्होंने कहा हे ब्रह्म वर्णे आ व्रतम देवतत्वाम जाओ तुम यह चार सौ गऊए इन्हें ले जाओ और जब तक एक सहस्त्र गऊ नहीं हो जाएगी तब तक आश्राम में तुम्हें प्रवेश नहीं करना है। मेरे प्यारे देखों सत्यकाम बड़े प्रसन्न हुए और सत्यकाम ने चार सौ गऊओं को ले करके आश्रम से गमन करता है। उसी के दुग्ध का आहार करना है उसी के दुग्ध से धृत और देखो उसमें, दुग्ध में याग करना है, देवताओं का आवाहन करना है। वह करते रहे। तो बेटा! इस प्रकार सत्यकाम अपने में विचरण करने लगे। तो विचार आता रहता है बेटा देखो ब्रह्मविद्या उसी को प्राप्त होती है जो जिज्ञासु होता है जो यथार्थ को ही दृष्टिपात करता है जो सत्य उच्चारण करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो वह अपने में विचार-विनिमय करता रहता। आज मैनें तुम्हें बहुत सी विद्याओं का वर्णन किया परन्तु संक्षिप्त में मैंने तुम्हें परिचय दिया है। विचार-विनिमय क्या मुनिवरो देखो विष्णु नाम परमात्मा का है, विष्णु नाम आत्मा का

है, विष्णु नाम माता का है, विष्णु नाम सूर्य का है और विष्णु नाम मेरे प्यारे देखो यहां यज्ञोमयी-विष्णु। जहाँ भी पालना का प्रसंग आयेगा उसी का नाम वाची-विष्णु कहलाता है। तो आओ मेरे प्यारे! देखों मैं षोडश-कलाओं की चर्चाए तो कल प्रगट करूंगा।

आज का विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुण-गान गाते इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा आज का वाक्। **आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह, क्या मुनिवरो देखों हम अपने में अपनेपन को जानते हुए विष्णु बनें आत्माम भूतम, यह आत्मा ही विष्णु का वाची कहलाता है।** यह है बेटा आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम **परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा को जानते हुए अपने में देवत्व को प्राप्त करते रहें।** यह है बेटा आज का वाक्। अब समय मिलेगा, तो कल मैं बेटा सत्यकाम की चर्चाए कल प्रगट करूंगा क्या उनका जीवन कितना यथार्थी और कितना तपों में रहा है। यह है बेटा आज का वाक्। अब समय मिलेगा शेष चर्चाए हम कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनुदधिः वाचाः।
ओ३म् यशश्चाम् प्राची रथं दिव्याः आपाः।
ओ३म् यशश्च मां मां देवं ग्राह गायाः।
अच्छा भगवन्। आज्ञा।

दिनाँक : ६–जून–१९९२
समय : रात्रि ८ बजे।
स्थान : चौ. लहरी सिंह
कसेरवा खुर्द मुजफ्फरनगर।

❐❐

।। ओ३म्।।

तप की महिमा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमनें पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमात्मा अनन्तमयी हैं और तमोमयी इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं और उसकी महती के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं। क्योंकि उसकी अनन्तमयी जो महती है जो एक-एक कण-कण में व्याप रही है तो हम उस परमपिता-परमात्मा को एक-एक कण-कण में दृष्टिपात करते रहें। क्योंकि हमारे जीवन, जिन कणों से हमारे जीवन का निर्माण हुआ है उस निर्माणवेत्ता की महती उस मानवीयत्व में निहित रहती है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में प्रायः रमण करता रहा है और चिन्तन करता रहा है कि मैं ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से उस मानवीयत्व परमपिता-परमात्मा की कृति को जानना चाहता हूँ। तो यह परम्परागतों से मानव अपने में विचार-विनिमय करता रहा है।

तप की विवेचना

आज का हमारा वेद-मन्त्र तप की महिमा का वर्णन कर रहा था क्योंकि हमारे वैदिक-साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के सूक्तों का वर्णन आता रहा है। **जैसे तपों में जाने वाला प्राणी मानों वह तपों में**

और रूढ़िवाद से वह उपरामता को प्राप्त हो जाता है। क्योंकि वास्तव में बिना रूढ़ि के पालन नहीं हुआ करता है तो वह रूढ़ि तो सामान्य होती हैं परन्तु वह रूढ़िवाद का विनाश करती है। जो ईश्वर के नाम पर रूढ़ियाँ बना करती हैं वह रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। यह वास्तव में देखो रूढ़िवाद अपने जीवन में भी नहीं रहना चाहिए। क्योंकि बिना रूढ़ि के माता अपने पुत्र का पालन नहीं कर सकती जब तक उसे अपनात्व नहीं होगा मानो देखो वह पालना में अधूरी ही सिद्ध होती हैं। इसलिए मैने यह पूर्व काल में कहा क्या अमृतम ब्रव्हे क्रता मानो देखो वह अपने में निष्ठावान हो करके और तपों में मानो देखो उसका आहार, व्यवहार और मन पवित्र होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो जब वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा क्या विद्यालयों में जैसे आचार्य मानो देखो अपने तपों में निष्ठ हो करके ब्रह्मचारियों को ऊँचा बनाता है मानो ब्रह्मचारियों को देखो वह पवित्र शिक्षा दे करके कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम जब ऊँचे बन सकते हो जब कि तुम्हारी इन्द्रियाँ मृत्यु से पार हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो मृत्यु का अर्थ ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा है क्या आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी! **जब तक तुम्हारी इन्द्रियों में अज्ञान है, तुम्हारे मन मस्तिष्क में अज्ञान है जब तक मानो तुम मृत्यु से पार नहीं हो सकते और बिना मृत्यु से पार हुए तुम्हारा जीवन सार्थक नहीं बन सकेगा।** इसलिए मैनें बहुत पुरातन काल में ये वर्णन करते हुए कहा था कि आचार्य जब देखो सबसे प्रथम ब्रह्मचारियों को कहता है क्या तुम मृत्यु को लांघ जाओ और मृत्यु से वह प्राणी लांघता है जो इन्द्रियों के विषय को जान करके उनका साकल्य बनाना जानता है। उनको साकल्य बना करके हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करना जानता है। मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार ऋषि ने वर्णन करते हुए, जब वशिष्ठ ने यह कहा, तो राजा देखो, उन्होंने कहा कि राम यथार्थ कहते हैं कि बिना तप के यह अपनी अयोध्या को ऊँचा नहीं बना सकते।

मन की जो उत्पत्ति होती है, मन की जो तरंगों का जो प्रादुर्भाव होता है तो वह मन ब्रह्मा देखो अन्न के द्वारा होता है और **जब अन्न पवित्र होता है तो मन की तरंगे पवित्र होती हैं और मन की तरगें ही मानों देखो तप में प्रविष्ठ हो जाती हैं। वह प्राण को सन्देश देता है अपने तप का और प्राण उसको गति कराता है।** तो वही मुनिवरो! वह तपोमयी तपम ब्रह्मा वस्तुते देवाः। आज के यहाँ वेद-पाठ में तपों की महिमा का वर्णन आ रहा था।

त्रेता के काल में रूढ़िवाद

मेरे प्यारे महानन्द जी ने इससे पूर्व काल में मुझे एक वाक् प्रगट करते हुए कहा था क्या राष्ट्रदम ब्रह्मे राष्ट्र की चर्चा, विवेचना, राष्ट्र की विवेचना करते हुए उन्होने कहा कि राष्ट्र में रूढ़िवाद नहीं रहना चाहिए। इन्होंने रूढ़ियों का वर्णन किया। मैनें तुम्हें कई कालों में वर्णन किया था क्या रूढ़िवाद मानो त्रेता के काल में भी प्रायः आता रहा है। त्रेता के काल में देखो लंका में नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हुआ था और वह रूढ़ियों का प्रादुर्भाव क्योंकि रावण, राक्षस सभी सम्प्रदाओं का स्वामीत्व था और एक देवी सम्प्रदा थी जिस सम्प्रदाओं का मानो देखो वह उनका पुत्र मेघनाथ उसका संचालक था और यज्ञों की पद्धतियों में मानो स्वार्थवाद की प्रतिभा का जन्म हुआ। तो वह नाना प्रकार की रूढ़ियों में उनका राष्ट्र परिवर्तित हो गया। यह **राक्षस** भी एक रूढ़ि कहलाती है।

मानव को तप में रहना चाहिए

देखो, **रूढ़ि का अभिप्रायः यह है कि जो ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन जाती हैं** उन रूढ़ियों से राष्ट्र और समाज में मानवता का ह्रास हुआ करता है और जब मानवता का ह्रास होता है तो रक्त पिपासा में मानव परणित हो जाता है। तो यह सम्प्रदाय इसलिए समाप्त होने चाहिए। अब यह समाप्त कैसे होते हैं? कल मेरे

पुत्र ने मुझे यह वर्णन कराया परन्तु आज मुझे एक वेदमन्त्र स्मरण आ रहा है। वह वेदमन्त्र यह कहता है तपम् ब्रह्मे राजन् प्रव्हा तपाः। मेरे प्यारे! देखो राजा जो बनता है वह तपा हुआ होना चाहिए और वह तपा हुआ जब राजा होता है, इन्द्रियों पर जय करने वाला और वह ब्रह्म-ज्ञान की पवित्र उड़ाने उड़ता है और देखो नाना प्रकार का मानो तर्कवाद से और गम्भीरता और ज्ञानवाद से जो अपना निर्णय हो जाता है तो उस निर्णय के लिए जब ध्रुव हो जाता है, अटल, मानो वह निश्चयात्मक हो जाता है उसको अपनाना चाहिए। तो विचार-विनिमय हमारा यह है क्या राजा को तपना चाहिए क्योंकि बिना तप के राष्ट्र कदापि ऊँचा नहीं बनता। बिना तप के देखो न गृह पवित्र बनता है। मेरी पुत्री बाल्यकाल में अपने ब्रह्मचर्य से तपायमान होती है और तपने के पश्चात् वही मानो देखो जब गृह में प्रवेश होती है तो ममतामयी को धारण करती है। यदि मेरी पुत्री तपेगी नहीं तो वह ममतामयी बनना उसके लिए असम्भव हो जाता है। तो इसलिए मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा, वेद का मन्त्र कहता है तपम ब्रह्मा तपो देवत्वाम् देवा ब्रह्मा तपा मानव को तप में रहना चाहिए।

राष्ट्र का अधिकारी कौन?

मुनिवरो! देखो जब तप में रजोगुण छाया हुआ रहता है तो तप नहीं हो पाता। मेरे प्यारे! देखो मुझे वह काल स्मरण आता रहा है जब राम भंयकर वनों से अम्ब्रहे बेटा! देखो लंका को विजय करके अयोध्या में जब उनका प्रवेश हुआ। तो अयोध्या में जब प्रवेश हुआ तो बेटा! देखो तब उनके स्वातार्थ मानो उनका स्वागत किया गया। भरत सबसे अग्रणीय थे, स्वागत करने के लिए। तो मुनिवरो! देखो अगले दिवस एक उनकी सभा हुई। वह सभा महाराजा शिव की अध्यक्षता में हुई और महाराजा शिव और देखो उसमें नाना ऋषि भी विद्यमान थे जैसे महर्षि विभाण्डक, महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ और माता अरुन्धती और मुनिवरो! देखो पारेत्वर ऋषि और भी नाना

ऋषिवर विद्यमान थे। जिन ऋषियों की मध्यस्थता में और राजा शिव की अध्यक्षता में बेटा! वह सभा का प्रारम्भ हुआ। भरत ने बेटा! नतमस्तिक हो करके यह कहा कि मैं इस राष्ट्र को अपनाना नहीं चाहता हूँ यह मेरे, मानो देखो राम का अधिकार है। मैं इसको, मैनें बहुत समय इसकी सेवा की है अब मैं सेवा का पात्र नहीं रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने यह वाक् कहा तो राम ने उपस्थित हो करके यह कहा कि मैं अभी राष्ट्र का अधिकारी नहीं हूँ। उन्होंने कहा क्यों? क्या अमृतम वनाम भुअसुतम राजतवप्रव्हे देवत्वाम् आयाम-तव राम ने यह कहा वेद का मन्त्र उच्चारण करते हुए क्या मेरा जो अन्तरात्मा है अथवा मेरे अन्तर्हृदय में रजोगुण, तमोगुण छाया हुआ है क्योंकि मैनें अभी-अभी लंका से, लंका को विजय किया है और विजय करने से मेरे अन्तर्हृदय में रजोगुण, तमोगुण छाया हुआ है। सतोगुण की मात्रा बड़ी सूक्ष्म है इसलिए और जब तक राजा दूसरो के अधिकार का क्या अपने कर्तव्य का पालन करता है तो राजा के हृदय में सतोगुण प्रधान होना चाहिए। मेरे में यह सतोगुण प्रधानता न रहने के कारण मैं राष्ट्र का अधिकारी नहीं हूँ। हे भरत! इस राष्ट्र का अधिकार तुम प्राप्त करो मानो तुम इसकी सेवा करते रहो। मैं तपम् ब्रह्मे मेरी इच्छा यह है कि मैं तपों में जा रहा हूँ। वेदमन्त्र कहता है तपम् ब्रह्मे तपाम दिव्याम भूतम ब्रह्मे वर्णा, मैं तप करूँगा तो मानो देखो मैं इसका अधिकारी बन सकता हूँ, इसलिए मैं तप में तपोनिष्ठ होना चाहता हूँ।

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज द्वारा तप की विवेचना

जब मुनिवरो! देखो राम ने यह कहा तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज उपस्थित हुए और वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा राम का शब्द तो वास्तव में बड़ा प्रिय है। क्या? बिना तप के राष्ट्र कदापि भी ऊँचा नहीं बनता है और राजा को तप करना चाहिए क्योंकि उसका मन, मस्तिष्क जब ही ऊँचा बनता है और मन, मस्तिष्क ऊँचा तपों से बनता है। जबकि उसका आहार और व्यवहार पवित्र बन जाता है

है परन्तु देखो इसमें अभिमान होने के कारण इसका मानो देखो यह तप अधूरेपन में जा रहा है। तो उस समय ब्रह्मणे, प्रभु! मैंने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया, क्या मैं इनको मृत्यु दण्ड देने के लिए तत्पर हूँ इनका अन्तरात्मा क्या उद्गीत गा रहा है। तो विचार-विनिमय क्या महर्षि विश्वामित्र ने कहा कि इसलिए राजा वह होना चाहिए जिसके द्वारा तप में अभिमान् न रहे अमृतम और तप की पिपासा बनी रहे परन्तु ब्रह्म-निष्ठ हो करके अपने यहाँ निर्णायात्मक बन सकता है। तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार मनम् ब्रहे अभिमान् के लिए उन्होंने बहुत अद्भुत किया।

विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो वह सभा मुझे स्मरण है उस सभा में नाना ब्रह्मवेत्ता हैं, नाना देखो राष्ट्रवेत्ता हैं, महाराजा शिव राष्ट्रवेत्ता थे और वह मानो देखो अनुशासन में अपने जीवन को धारण करने वाले मेरे प्यारे! देखो वह उनकी अध्यक्षता में वह समाज एकत्रित हुआ। मेरे पुत्रो! देखो महर्षि अमृताम् ब्रह्मणे देखो उच्चारण करके वह बोले देखो, अभिमान् राजा में नहीं होना चाहिए और देखो राजा के यहाँ देखो अभिमान् होने से ही राष्ट्रीयता में देखो अधूरापन आ जाता है, उसका अभिमान् ब्रह्मणे देखो मृत्यु में ले जाता है। यह उच्चारण करके बेटा! वह अपनी स्थली पर विद्यमान हो गये।

महात्मा भरत के उद्गार

देखो, महात्मा भरत, महाराजा भरत उपस्थित हुए और भरत ने यह कहा कि तुम ऋषि-मुनि अपने-अपने विचार दे रहे हो यह सब विचार तुम्हारे शरोधार्य हैं परन्तु देखो मुझे बहुत समय हो गया है मैं प्रजा की क्या, मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ। मेरी इच्छा यह है कि मैं इस कर्तव्य से अवऋण हो जाऊँ क्योंकि राजा के द्वार पर देखो राजा के यहाँ कई प्रकार के ऋण होते हैं और मैं उन ऋणों से अवऋण होना चाहता हूँ। सबसे प्रथम ऋण मानो देखो अपने पूर्वजों

मुझे स्मरण आता रहता है इस अयोध्या का निर्माण मानो देखो स्वायम्भुमनु ने किया था किसी काल में और अयोध्या में जितने राजा हुए हैं वह सब तपों निष्ठ हुए हैं। मानो देखो राम के जो महापिता महाराजा दिलीप थे वह बारह वर्ष तक एक गऊ और धेनु की सेवा करते-करते बारह वर्ष का उन्होंने तप किया था। राष्ट्र भी शून्य हो जाता है। राजा के राष्ट्र में प्रत्येक मानव अपने कर्तव्यवाद में रत्त हो जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो जब उन्होंने यह कहा अमृतम देखो तपश्यम ब्रव्हा कीर्ति वेदमन्त्र कहता है कि तपों में रहना चाहिए और तपों में परणित होने वाला राजा ही मानो देखो प्रजा को ऊँचा बना सकता है, वह रूढ़िवाद को नहीं पनपने देगा। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने बहुत पुरातन काल में यह वाक् कहते हुए कहा तो राम अमृतम राम बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया। उन्होंने कहा प्रभु! आपको धन्य है मैं आपकी आज्ञा का सदैव पालन करता रहूँ मेरी ऐसी मानो मनोइच्छा रहती है भगवन्! तो मेरे प्यारे! देखो अमृतम देखो जब वह वशिष्ठ यह वाक् उच्चारण करके अपनी स्थली पर विद्यमान हो गये।

महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज द्वारा तप का वर्णन

इतने में महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उपस्थित हुए और विभाण्डक मुनि ने कहा क्या ये राम ने जो यह शब्द कहा कि मेरे में तमोगुण और रजोगुण छाया हुआ है क्योंकि राजा के हृदय में यदि तमोगुण, रजोगुण दोनों छाए हुए होगें तो वह राष्ट्र का अधिकारी नहीं बनना चाहिए। मानो क्योंकि रजोगुण, तमोगुण उसे सबसे प्रथम उसको शोधन करने के लिए अपने आहार को पवित्र बनाना है और आहार जब तक पवित्र नहीं बनेगा तब तक राजा का मन मस्तिष्क ऊँचा नहीं बन पायेगा मानो देखो अपने राष्ट्र में वह अपने धर्म और मानवता को नहीं अपना सकता। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा कि इसी अयोध्या

में महाराज अश्वपति रहे हैं और महाराजा अश्वपति मानो देखो प्रातःकालीन देखो तारामण्डलों की छाया में अपने आसन को त्याग देते थे और त्याग करके वह अपने में कला-कौशल मानो देखो कुछ कृषि का उद्गम करते और कृषि का उद्गम करके उसमें जो अन्न उत्पन्न होता उसको वह पान करते थे। कामधेनु गऊ के दुग्ध का पान करते हुए मानो परमात्मा का चिन्तन करते कुछ शारीरिक और बौद्धिक दोनो प्रकार का मानो देखो वह क्रियाकलाप करते। जब वह राष्ट्र का क्रियाकलाप करते थे, राष्ट्र के कर्तव्य का पालन करते थे राजा अश्वपति। इसी प्रकार यह अयोध्या वैसी ही नहीं है परन्तु देखो इसमें जो भी राजा अश्वपति हुआ वह स्वयं देखो मन मस्तिष्क का निर्माण अन्न से होता है और जब राजा दूसरों के अन्न को ग्रहण करने वाला होगा या मेरी पुत्रियों के शृंगार को हनन करने वाला राजा होगा वह राष्ट्र को ऊँचा नहीं बना सकता। मेरे पुत्रो! देखो यह महर्षि विभाण्डक मुनि ने यह वाक् प्रगट किया तो विभाण्डक ने कहा कि **हम सदैव यह याचना करते रहते हैं प्रभु से कि सुमति दे करके और मन मस्तिष्क सदैव सर्वत्र प्राणियों का पवित्र होना चाहिए।** मन मस्तिष्क से देखो मानव का जीवन प्राण की आभा में रत्त होता रहता है मानो देखो इस प्रकार का वाक् उच्चारण करके विभाण्डक मुनि महाराज ने कहा कि राजा को तप अवश्य करना चाहिए और तप है इन्द्रियों के ऊपर जय और इन्द्रियों पर विजय करने वाला ही मानो तपोनिष्ठ कहलाता है। इतना उच्चारण करके बेटा! वह भी अपनी स्थली में मौन हो गये और मौन हो जाने के पश्चात् राजग प्रमाण ब्रहे बेटा! देखो राम ने यह उच्चारण किया था कि मैने लंका को विजय किया है और लंका विजय करने से मेरे हृदय में तमोगुण, रजोगुण छाया रहा मानो देखो उससे मैं राज्य का अधिकारी नहीं हूँ यह वाक् उच्चारण उन्होंने पूर्व किया।

ब्रह्मवेत्ताओं की विचित्र देन

महाराजा विश्वामित्र उपस्थित हुए और महाराजा विश्वामित्र ने कहा क्या हे ब्रहे! हे भगवन्! हे शिवम् ब्रह्मा; हे शिव तुम मानो देखो इस सभा के सभापतित्व हो परन्तु मैं अब क्षमा चाहता हुआ एक वाक् उच्चारण करना चाहता हूँ क्या मैंने अपने जीवन में तपों की महिमा का वर्णन आज मानों द्वितीय मैने श्रवण किया है। पूर्व काल में मैं महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से मैं श्रवण करता रहा हूँ परन्तु देखो हमारे यहाँ ब्रह्मवेत्ताओं की बड़ी विचित्र देन रही है क्या वह ब्रह्म निष्ठ बन करके ब्रह्म के द्वार पर पहुँचा देते हैं और उन्होंने यह कहा कि मैं जब तक राजा रहा और मैंने मानो देखो वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ मैं क्रोधित हुआ एक कामधेनु गऊ को अपनाने के लिए मैनें देखो छंदो सहित गायत्राणी छन्दों का पठन-पाठन किया। भयंकर वन में चला गया। जब तक मेरे इस शरीर में देखो राष्ट्र का रक्त रहा है दूसरों के मानो देखो आश्रित होने वाला राजा और वह अमृतम देखो अन्न को पान करता रहा और देखो मन-मस्तिष्क को दूषित बना देता है। तो मैं मानो देखो तप करने लगा, वायु का सेवन किया भयंकर वनो में, देखो मैने वनस्पतियों का अध्ययन किया और अध्ययन करने के पश्चात् मानो देखो उसको आहार में लाता रहा। मन मस्तिष्क ऊँचा बन गया परन्तु देखो एक अभिमान् उसके पश्चात् भी बना रहा। अभिमान् बन जाने से जब मैंने वशिष्ठ मुनि महाराज से अभिमान् के कारण मानों देखो मैने अम्रते विद्यार्थी को भी नष्ट किया और उनको मृत्यु दण्ड देने के लिए जब तत्पर हुआ तो माता अरुन्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज दोनों ने यह कहा कि यह तपोपम् ब्रह्मा तपय ब्रहे क्रतम। वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे और मैं मृत्यु दण्ड देने के लिए तत्पर था परन्तु उस समय अरुन्धती ने कहा प्रभु! आज तो चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त है। प्रभु! यह कैसा अनूठा प्रकाश है। तो उस समय वशिष्ठ ने यह कहा क्या हे देवी! यह जो विश्वामित्र है यह बड़ा तपस्वी

करके और मैं अपने को ब्रह्म-ग्रन्थि बना करके ब्रह्म को प्राप्त होना चाहता हूँ। मैं इस राष्ट्र को नहीं चाहता। मेरे प्यारे! देखो राष्ट्र उनके लिए मानो एक अरिष्ट कहलाता है मानो एक खिलवाड़ बना हुआ है। राम कहता है मैं राष्ट्र को नहीं चाहता। भरत कहता है मैं राष्ट्र को नहीं चाहता। यह कैसा मानो देखो उनका खिलवाड़ है? राष्ट्र का जब विचार आता रहता है कि जब राष्ट्र में खिलवाड़ बन जाता है, राष्ट्र अपना करके, न हो करके कर्तव्य का पालन रह जाता है। खिलवाड़ के रूप में तो वह राष्ट्र अपवित्र बनता रहता है। तो आज का विचार केवल यह बेटा! देखो रामम् ब्रहे व्रतम जब यह भरत ने कहा तो राम बड़े प्रसन्न हुए और राम ने कहा कि भई भरत मैं तपस्या करने अवश्य जाऊँगा।

भगवान् राम द्वारा तप की व्याख्या

मेरे प्यारे! देखो महाराजा शिव ने अन्त में यह कहा क्या भई जब राम की इच्छा तप करने की है तो भयंकर बन में चले जाओ, तप करो और तप करके, बारह वर्ष का तप करके तुम राष्ट्र को अपनाओ। मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या मुनिवरो! देखो, वह आज्ञा पा करके भरत ने अन्त में यह कहा क्या तपम ब्रह्मे राम से यह प्रश्न किया कि तप कहते किसे हैं, जिस तप के लिए तुम पुकार रहे हो? उन्होंने कहा कि **तप कहते हैं अपनी इन्द्रियों को तपाना और जो हमारे अन्तर्हृदय में जो दूषित संस्कारों का जन्म हो गया है उन संस्कारों को, दूषित संस्कारों को नष्ट करना तप और स्वाध्याय के द्वारा और इन्द्रियों पर जय करने के द्वारा हम मानों देखो दूषित संस्कारों को नष्ट कर दें और सुन्दर संस्कारों को जन्म देने का नाम तप कहा जाता है।** मैं तप करने के लिए इसलिए जा रहा हूँ अपने अन्नाद से और व्यवहारों से तपम् ब्रहे मैं अपने को ऊँचा बनाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो राम ने जब यह कहाँ तो महाराजा शिव ने कहा यथार्थ, कहाँ जाओगे तप करने के

के होते हैं। जब हमारे पिता, महापिता राजा हुए हैं अयोध्या में मानो देखो वह हमारे ऊपर ऋण है और यह वह ऋण इस रूप में है क्या हम मानो उनके पदचिन्हों पर चल करके तपों में देखो यह अयोध्या को नहीं बना सकते और प्रजा को कर्तव्यवाद में नहीं ला सकते तो हमारा राष्ट्र हमारे पूर्वजों का ऋण देखो ज्यों का त्यों बना रहेगा और यदि प्रजा में मानो सुगन्ध आने लगेगी विचारों की सुगन्धि, उनके क्रियाकलाप में सुगन्धि और राष्ट्रवादियों में जब सुगन्धि आने लगेगी तो मानो देखो वह सुगन्धि हमारे पूर्वज और देवताओं के ऋण से अवऋण हो जाएगें। जैसे **यज्ञोपवित्र को धारण करने वाले के ऊपर तीन प्रकार के ऋण होते हैं।** मानो देखो सबसे प्रथम उसके द्वारा ऋषि-ऋण होता है और देखो सबसे पूर्व देखो मातृ-ऋण होता है और द्वितीय में ऋषि-ऋण होता है और तृतीय में देव-ऋण कहा जाता है। मानो देखो सबसे प्रथम जो माता-पिता हैं जिसके गर्भस्थल में हमारा निर्माण हुआ है और निर्माणवेत्ता ने निर्माण किया माता के विचारों को और माता के कर्तव्य पारायणता की तरंगो से देखो हमारे शरीर का निर्माण होता है और वह निर्माण मानो देखो उनकी आज्ञा का पालन करना और देवत्व को धारण करना, मानो देखो उन पूर्वजों की मातृ शक्ति की आज्ञा का हमें पालन करना यह हमारा मानो देखो पितृ-ऋण कहलाता है। जिसे मातृ ऋण कहते हैं और पितरो ब्रह्मणे देखो पितर, हमारे जितने भी पितर हैं वह पिता, महापिता सब पितर होते हैं उनके क्रियाकलापों के अनुसार जीवन को हमें व्यतीत करना चाहिए और द्वितीय जो ऋण है वह हमारे यहाँ देखो देवाम् भूतम ब्रह्मा आचार्य-ऋण देखो जिसको ऋषि ऋण कहते हैं। ऋषि कहते है तपों को क्योंकि मानव को तपना चाहिए। क्योंकि तपस्या में ही परणित होने वाला देखो ऋषि ऋण से अवऋण हो सकता है, यदि वह तपेगा नहीं तो ऋषि-ऋण से अवऋण नहीं होगा। ऋषि कहते हैं उसको जो तपा हुआ होता है और **जब वह तप जाता है तो मानो देखो वह ऋषि-ऋण से अवऋण हो जाता है। तपता जब है जब वह देखो प्रत्येक वस्तु के ऊपर**

विचार-विनिमय करता है, अध्ययन करता है, प्रत्येक रूप में मानो देखो अपने संस्कारों को जागरूक करता है और अध्ययन करता हुआ मानो देखो वह स्वाध्याय करता रहे और स्वाध्याय करता हुआ देखो ऋषि के ऋण से अवऋण हो जाता है। और ऋषियों के ऋण से जब अवऋण हो जाता है वह ब्रह्मज्ञान की चर्चा करता है। कहीं मानो लौकिक व्यवहार की चर्चा करता है, कहीं विज्ञान की चर्चा करता है, कहीं अणु और परमाणु में प्रवेश हो जाता है, कहीं लोक-लोकान्तरों की माला बना लेता है। कहीं मानो देखो अपने जीवन को नाना लोक-लोकान्तरों का यात्री बना लेता है।

तो विचार आता है कि वह मानव बेटा! देखो वह इस देवम् ब्रह्मा देवतो वह ऋषि ऋण से अवऋण हो जाता है तो ऋषि-ऋण से, अवऋण से होने वाले जय कहलाता है। बेटा! जो इन्द्रियों का, मन का, सब का साकल्य बना करके प्राण में हूत करता है और प्राण में हूत करता हुआ मानो देखो अपान और व्यान देखो प्राण में रत्त हो करके अपने में मानो देखो परमात्मा का दिग्दर्शन करता है। मेरे प्यारे! देखो वह ऋषि-ऋण से अवऋण हो जाता और तृतीय देखो वह पितर-ऋण और देवम् ब्रह्मा देव-ऋण वह कहलाने वाला है जो मेरे प्यारे! देखो जो याग में परणित हो जाता है। नाना प्रकार का साकल्य बनाता है और वह देवताओं का ऋणी कहलाता है जो देवता उसके कर्तव्य से, उसके भोज्य से, उसके अग्न्याधान से मानो यदि तृप्त नहीं होते तो देवता मुनिवरो! देखो अतृप्त रहते हैं। हमारा शरीर भी मानों देवताओं के निर्माण से निर्माणीत हो रहा है और वही देव-ऋण है बेटा! देखो यजमान जब अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के साकल्य को एकत्रित करता है और एकत्रित करके उसको देवनाम् मुखम् ब्रह्मा अग्ने वृत देवत्वाम्। यह अग्नि देवताओं का मुख होने से मेरे प्यारे! देखो उसमें हूत करता है और हूत करके वायु-मण्डल को पवित्र बना देता है और जब वायु-मण्डल उसके सुविचारों से और साकल्य से पवित्र बन

जाता है तो गृह में बेटा! सुगन्ध, देखो अनुठी सुगन्धि उत्पन्न हो जाती है और उसी सुगन्धि के कारण वह देवताओं के ऋण से अवऋण होता है। वही देवता देखो हमारे शरीर में क्रियाकलाप कर रहे हैं मानो देखो पंच-महाभूतों के रूप में वह हमारे देवता हैं और देवता जब देखो सुगन्धि से तृप्त हो जाते हैं तो मानव बेटा! रूग्ण में परणित नहीं होता वह देखो अवरणीय बन जाता है, रूग्ण से रहित हो जाता है उसे मृत्यु देखो उसके निकट नहीं आती। तो विचार आता है बेटा! देखो मृत्यु से पार होने के लिए तो मुनिवरो! देखो यह तीनो प्रकार के ऋणों से अवऋण हो करके बेटा! एक ब्रह्म-ग्रन्थि लग जाती है, यज्ञोपवित्र कहते ही उसे हैं जहाँ देखो तीनो ऋणों से अवऋण हो करके देखो एक ग्रन्थि लग जाती है उसे **ब्रह्म-ग्रन्थि कहते हैं।** बेटा! ब्रह्म-ग्रन्थि उसे कहते हैं जब तीनों ऋणों से अवऋण हो करके वह ग्रन्थि स्पष्टीकरण में परणित हो करके बेटा! देखो ब्रह्म में जब लीन हो जाती है तो बेटा! **मोक्ष की पगडन्डी प्राप्त हो जाती है।**

तो विचार बेटा! यह कहते हैं बेटा! विचार-विनिमय करने वालो ने यह कहा है कि इन ऋणों से अवऋण होने वाला जो राजा के राष्ट्र में जो समाज है या राजा है तो मेरे प्यारे! देखो वह राजा अमृतम् ब्रह्मे व्रतम् देखो राजा अपने राष्ट्र में सुगन्धि को स्थापित करेगा। महाराजा भरत ने कहा कि मैं यह चाहता रहता हूँ सदैव कि मेरी प्रजा में, हमारे अयोध्या में रहने वाली जो प्रजा है प्रत्येक गृह में देखो कोई भी मानव ऋणों से अवऋण होता रहे, कोई भी ऋण न रहे। तो मानव समाज में बेटा! देखो ऋणी बनना यह अप्रति अपशाप (अभिशाप) माना गया है। तो इसलिए देखो हम देवम् मात्रम् ब्रह्मा देखो मातृ-आज्ञा और ऋषि आज्ञा और मुनिवरो! देखो, देवता-आज्ञा यह तीन प्रकार के हमारे ऊपर ऋण कहलाते हैं। इन ऋणों से अवऋण होने के लिए राष्ट्र का निर्माण होता है और राष्ट्र की परम्परा भी जब ही बनती है। तो महात्मा भरत ने यह कहा प्रभु! मैं यह चाहता हूँ क्या मैं इससे अवऋण हो

उत्तरायण

आओ मेरे प्यारे! देखो वह तृतीय भुजा कहलाती है और चतुर्थ जो भुजा है 'उदीचीदिक' कहलाती है। उदीची का अभिप्राय क्या है? उदीची कहते है उत्तरायण को। तो मेरे प्यारे! जितने साधक जन है वे उत्तरायण को मुखाभिमुखी करके बेटा! साधना करते हैं योगाभ्यास करते हैं, प्राण की गति को लेते हैं। क्योंकि जितना भी ज्ञान का भण्डार है, वह उत्तरायण में रहता है। हमारे यहाँ मुनिवरो! देखो उत्तरायण और दक्षिणायन दो प्रकार की दिशा कहलाती है। मेरे प्यारे! दो प्रकार का ज्ञान होता है एक उत्तरायण होता है, एक दक्षिणायन होता है। मुनिवरो! देखो एक माह में दो पक्ष होते हैं एक उत्तरायण होता है, एक दक्षिणायन होता है। एक शुक्ल होता है। तो एक कृष्ण होता है। मेरे प्यारे! कृष्ण अंधकार को कहते हैं और शुक्ल प्रकाश को कहते हैं। तुम्हें यह प्रतीत होगा मेरे पुत्रो। महाभारत के काल में जिस समय महाभारत का संग्राम हो रहा था। तो मुनिवरो! देखो पितामह भीष्म कौन? महाराजा शान्तनु के जेठे पुत्र। जब मुनिवरो! देखो उन पर अर्जुन के बाणों की वृष्टि हुई, तो मुनिवरो! देखो वे शर-शय्या पर बाणों की शैया पर विद्यमान हो गये। जब विद्यमान हो गये, तो उन्होने यह संकल्प किया हुआ था कि जब तक सूर्य उत्तरायण में नहीं होगा, तब तक मैं अपने शरीर को नहीं त्यागूंगा। क्योंकि उत्तरायण का अभिप्राय क्या है?

मेरे प्यारे! उत्तरायण किसे कहते हैं? उत्तरायण कहते हैं प्रकाश को। क्योंकि उत्तरायण में जब सूर्य होता हे, उत्तरायण प्रकाश है, ज्ञान है। आज हम यदि सूर्य से उत्तरायण को मापने लगते हैं तो बेटा! देखो, वैदिक साहित्य में यह मापा नहीं जाता है। परन्तु जब हम इसको दार्शनिकता से इसको गठित करना चाहते हैं ता प्रायः

लिए? राम ने कहा कि वहाँ जाऊँगा जहाँ देखो प्रभु के राष्ट्र से तो मैं दूरी नहीं जा सकता परन्तु देखो जहाँ, जहाँ वायु देखो पवित्र मिलेगी, जहाँ अग्नि पवित्र मिलेगी, जहाँ मानो देखो मैं अपने अन्तःकरण को ऊँचा बना सकूँ। तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने यह वाक् कह करके वह सभा विसर्जन हो गई और विसर्जन होने के अगले दिवस बेटा! देखो राम तप करने चले गये।

तो मुनिवरो! देखो तप की महिमा का गुणगान गाते हुए तपम हृदयानी गच्छतम तपे वर्णा अस्सुति देवाः। मेरे प्यारे! देखो, तप करना चाहिए क्योंकि हमारे यहाँ वैदिक-साहित्य में तप की बड़ी महिमा का वर्णन आता है देखो, जब महात्मा-जन साधक बन करके निर्जले में देखो जब अपने मन और प्राण का, दोनों का सहयोग करने लगते हैं, दोनों का मिलान करने लगते हैं, तो उनका आत्मा पवित्र बनने लगता है। **वायु का सेवन कर-कर के बेटा! ऋषि-मुनियों ने तप किये हैं और तप के ही कारण मुनिवरो! देखो वह ऋषि कहलाते हैं।** मेरे प्यारे! देखो यदि तप नहीं होगा तो जीवन नहीं होगा और जीवन नहीं होगा तो मुनिवरो! देखो हमारी मृत्यु और मृत्यु को प्राप्त होते रहेंगे। इसलिए मानव को मृत्युञ्जय बनना चाहिए और मृत्युञ्जय वह बनता है जो तपों में रहता है। जिसकी प्रत्येक इन्द्रियाँ बेटा! तप में ही निहित रहती है, ब्रह्मचर्य से सजातीय रहती हैं और ब्रह्मचर्य का मनका देखो, ब्रह्मचर्य का देखो श्वास का मनका बना करके जो ब्रह्म-सूत्र में पिरोना जानता है वह माला को जानता है। मेरे प्यारे! देखो उस माला को हमें धारण करना चाहिए। विचारवेत्ता कहते हैं कि प्रत्येक श्वांस का अरे! मनका बनाओ और मनके को ब्रह्म-सूत्र में पिरो करके माला बना दो जैसे ब्रह्माण्ड की, लोकों की माला बनी है, जिसकी चर्चाएँ बेटा! मैं कल प्रगट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह तपम ब्रह्मे तपाम देवत्वाम तपा प्रत्येक मानव को तपों में रहना चाहिए क्योंकि

तप से मानव का जीवन पवित्र होता है। यह मानों देखो सूर्य तपता है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बनती है। चन्द्रमा तपता है तो मानो देखो रात्रि को, अन्धकार को अपने गर्भ में धारण कर लेता है इसलिए प्रत्येक मानव को तपों में रहना चाहिए। तो आज का विचार क्या हम परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम मानों अपनी इन्द्रियों को जय बनाये मृत्यु से पार होने का प्रयास करें। देवत्व को धारण करते हुए सागर से पार हों। कल समय मिलेगा तो बेटा! मैं शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मानाः गायन्तवाः।
ओ३म् देवम् आप्याम् गर्तस्वाः वायाम्।
अच्छा भगवन्।

दिनॉक : १६ फरवरी, १९९२
समय : रात्रि ८ बजे
स्थान : ग्राम रासना, मेरठ

भगवान् राम की प्रतिभा

जिस समय भगवान् राम को वन प्राप्त हो गया और जब वह पंचवटी पहुँचे तो उनके द्वार सुदर्शन ऋषि महाराज आ पहुँचे। उन्होंने कहा "भगवन्! आप ऐसे स्थान में विराजमान हैं, जहाँ रावण आततायी का आप पर आक्रमण हो सकता है। उस आक्रमण के लिये आपके द्वारा कोन सा साधन है, जिससे आप अपनी रक्षा कर सकते हैं?" भगवान राम ने कहा कि "मेरे द्वारा ऐसा साधन है कि मैं उससे अपनी रक्षा कर सकता हूँ।" उन्होंने कहा कि "क्या है?" भगवान् राम ने कहा कि "हे ऋषिवर! मेरे द्वारा एक चरित्र की प्रतिभा है। सत्यता की प्रतिभा है, मैं अपने सत्य ज्ञान से उससे सङ्ग्राम कर सकता हूँ।"

लक्ष्मण विज्ञान में बड़े पूर्ण थे। निपुण होने के कारण उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों की प्रतिभा को जानने का प्रयास भयङ्कर वन में किया था एक समय वे (राम-लक्ष्मण) महर्षि भारद्वाज के आश्रम में प्रविष्ट हुए जब भारद्वाज और उनकी पत्नी वहाँ विराजमान थे। भारद्वाज ने कहा कि "हे राम! आप भयङ्कर वन में आ गये हैं। यहाँ कैसे आप सदाचारियों की रक्षा करोगे क्योंकि यहाँ आपको आततायी प्राणी बहुत प्राप्त होंगे।" महर्षि भारद्वाज ने कहा कि "मैं अपने जीवन में अनुसन्धानवेत्ता रहा हूँ। मेरे द्वारा कुछ अस्त्रों-शस्त्रों का कोष है, इसको तुम स्वीकार कर लो।" महर्षि भारद्वाज ने जिन यन्त्रों-तन्त्रों को जाना था वे सब भगवान् राम को अर्पित कर दिये। उन यन्त्रों-तन्त्रों को उन्होंने (राम) पंचवटी पर युक्त कर लिया था। यह होती है मानव की साध्य-प्रतिभा, कि ऋषि-महर्षि भी उनके जीवन के साथी बन जाते हैं।

(प्रवचन २६–जुलाई–१९७३, जोरबाग, नयी दिल्ली)

पूज्यपाद गुरुदेव

श्रद्धा सुमन

परमपिता परमात्मा की इस अद्भुत रचना में मानव जीवन पर्यन्त इसके अथाह ज्ञान-विज्ञान को पाने का प्रयास करता रहता है और अन्त में न जाने अपने स्थूल रूप से कहाँ छिप जाता है। इसी प्रकार दिनॉक 3 दिसम्बर, 2011 को चौ. अजब सिंह सुपुत्र स्वर्गीय चौ. मंगतसिंह निवासी ग्राम दाह जि. बागपत उ. प्र. अपने नश्वर शरीर के त्याग कर हम सबकी दृष्टि से ओझल हो गये। इनके पिता श्री आर्य समाज के अपने समय के प्रमुख स्तम्भ थे और उन्होंने अपने समय में पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा अपने क्षेत्र में (चौगामा) सर्व प्रथम प्रवचनों का शुभारम्भ कराया और अपने जीवन काल में अनेक बार इस शुभ को कराके जन-साधारण को लाभान्वित करते रहे। उनके पश्चात् उनके पुत्र श्री अजब सिंह जीने इस धारा को और आगे बढ़ाया जिसमें उन्होने पारायण यज्ञों को भी पूज्यपाद गुरु के द्वारा अनेक बार अपने यहां पर सम्पन्न कराया और उनके पश्चात् भी। वैदिक परम्परा को बढ़ाते हुए समाज कलयाण के लिए एक कन्या विद्यालय की दाह में स्थापना की।

श्री अजब सिंह जी जीवन पर्यन्त पूज्यपाद गुरुदेव के सभी कार्यों में तन-मन-धन से जुड़े रहे और गांधी धाम समीति के एक प्रमुख सदस्य के रूप में आश्रम की उन्नति में क्रियाशील रहे। उनके वियोग को समाज एवम् आश्रम लम्बे समय तक अपने में अनुभव करता रहेगा।

श्री गांधी समिति (पंजी.)
वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

यह गठित हो जाता है। क्योंकि उत्तरायण कहते हैं जब सूर्य उत्तरायण में हो। क्योंकि सूर्य का अभिप्राय यह है सूर्य के दो प्रकार के स्वरूप हैं।

एक समय बेटा! बहुत पुरातन काल में वार्ता है। **कहीं उत्तरायण दिशा में 'स्वेन' नामक राजा के यहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था बेटा!** बहुत परम्परा की वार्ता है। क्योंकि वहाँ वृष्टि याग कराना था। तो मैं आज उस साहित्य में तो जाना नहीं चाहता हूँ। परन्तु वहाँ उस याग में यह प्रसंग उत्पन्न हुआ कि क्या सूर्य ही उत्तरायण है या उत्तरायण का और भी स्वरूप माना जाता है। दक्षिणायन में क्या संतुलना की जा सकती है परन्तु देखो सूर्य के दो स्वरूप-एक लौकिक और एक परलौकिक दो इसके रूप माने जाते हैं। एक लौकिक जो प्रातःकाल में उदय होता है। मानव के नेत्रों का प्रकाश बन करके आता है। मानव सूर्य के प्रकाश में अपना कर्तव्य प्रारम्भ कर देते हैं। एक सूर्य का यह अदिति रूप कहलाया जाता है। यह अग्नि का भण्डार है। अग्नि के प्रकाश से, परमपिता परमात्मा के द्यु के प्रकाश से वह प्रकाश देता रहता है।

एक हमारे यहाँ 'वेद-रूपों' सूर्य माना गया है। वेद-रूपी सूर्य का कैसा प्रकाश है? वह ज्ञान-रूपी सूर्य कहलाता है। जैसे मानव के नेत्रों का प्रकाश इस अदिति सूर्य से अन्धकार समाप्त होता है इसी प्रकार जो वैदिक-साहित्य को गंभीरता से अध्ययन करने वाले होते हैं, ज्ञान रूपी प्रकाश से, बेटा! मानव के अन्तःकरण में प्रकाश होता है। देव! यह कैसी विचित्रता है बेटा! वैदिक साहित्य में प्राप्त होती है? क्या? मानो वह जो सूर्य उदय हो रहा है वह ज्ञान रूपी सूर्य, उससे मानव का अन्तर्हृदय पवित्र और प्रकाश में जा रहा है।

पुष्प संख्या 35 प्रवचन दिनॉक 28 सितम्बर 1979

पूज्यपाद-गुरुदेव

उद्‌बोधन

मैं आज यह उच्चारण करने आया हूँ कि ब्राह्मणों में एक महानता होनी चाहिए, विचित्रता होनी चाहिए। उनका अन्तरात्मा इतना याज्ञिक होना चाहिए कि जिससे राष्ट्र हो, कोई भी हो, वह बाध्य हो जाए, विचारों में उसके बाध्यपन आ जाए और वह उस वाक्य को स्वतः ही प्रतिभा में लाने का प्रयास करे। हम यह विचार-विनिमय करते हैं कि वास्तव में हमारा मानवीय जीवन कितना सुन्दर और पवित्र है। आज मैं इन वाक्यों को अधिक उच्चारण नहीं करना चाहता। वाक्यों के उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हम सदैव अपनी मानवीयता को उत्तम बनाएं, याज्ञिक बनाएं, क्योंकि इसी में ही तो सुन्दरत्व होता है। राष्ट्रीय विचार भी मानव का एक यज्ञ है। कैसा सुन्दर यज्ञ है? एक राष्ट्रीय नेतृत्व कर रहा अपनी निष्ठा से, उसमें कितनी निष्ठा है और निष्ठावान बन करके वह चलता है तो उसके द्वारा नाना प्रकार की आपत्ति आएंगी तो उन्हें वह पार कर जाता है। जैसे एक याज्ञिक पुरुष होता है, अन्तरात्मा में यज्ञ करने वाला जो पुरुष होता है वह चलता चला जाता है, वायु की नाना प्रकार की आपत्ति उस मानव के समीप आती हैं परन्तु वह सबको उलांघ जाता है। आज हमें उन सभी पर विचार-विनिमय करना है।

पुष्प संख्या 13 प्रवचन दिनाँक 9 नवम्बर 1969

पूज्यपाद-गुरुदेव

स्मृति

मानवीय श्री ओमप्रकाश आर्य निवासी ग्राम सिरसीलि पूज्यपाद गुरुदेव के अनन्य भक्तों में से एक हैं जो कि परिवार सहित इस ज्ञान की धारा से जुड़े हुए हैं। बड़े सहज, सुन्दर और व्यवहार कुशलता से परिवार का जीवन चक्र चला रहा था। परन्तु एक दिन अकश्मात् ही आर्य जी की धर्म देवी एक रेल-दुर्घटना में मुरादनगर अपने परिवार और हम सबसे दूर चली गई। सृष्टि का आवागमन का चक्र निरन्तर चलता रहता है जिसको मानव देखते हुए भी समझने में अनभिग रहता है। परिवार में माता के रिक्त स्थान की पूर्ति का होना असम्भव हैं परन्तु उनके बनाये आदर्शों पर जीवन को चलाने से माता की निरन्तर वात्सल्यता का अनुभव मानव अपने जीवन में स्थिर रख सकते है।

परमपिता परमात्मा से नम्र निवेदन है कि इस वियोग के समय परिवार को सहन शक्ति प्रदान करते हुए अपनी अनुपम कृपा से सम्पन्न रखें।

श्री आर्य जी ने अपनी धर्म देवी की स्मृति में पत्रिका के प्रकाश के लिए 1100 रु. का सहयोग प्रदान किया है जिसके लिए समिति उनका और उनके परिवार का हार्दिक आभार प्रकट करती है।

श्री गांधी समिति (पंजी.)
वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

जनवरी 2012/यौगिक प्रवचन

मासिक सहयोगी

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री मैं. ओम् बायो इन्डस्ट्रीज धीर खेड़ा हापुड़ (श्री सुरेश त्यागी व श्री विवेक त्यागी)	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजि.	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएडा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, होशियारपुर, पंजाब	500 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा,	125 रुपये
डॉ. ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़	100 रुपये
श्री राहुल शर्मा, बैंगलोर	100 रुपये
श्री पराग शर्मा, नोयड़ा	100 रुपये

सूचना

वैदिक अनुसंधान समिति के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए 100 रु. है जिसको आप समिति के पते पर व प्रकाशन मंत्री के पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं।

सभी आजीवन सदस्यों को यौगिक प्रवचन मासिक पत्रिका भेजी जा रही है। पत्रिका प्रत्येक मास की 10\11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी आजीवन/वार्षिक सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में हमें एक सप्ताह के बाद लिखें। सूचना मिलने पर पत्रिका पुनः प्रेषित करेंगे।

डॉ. मधुसूदन, ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली 110017

दूरभाष : (0) 11-26498737

वैदिक अनुसंधान समिति (पंजी.)

वर्ष 40 अंक 472
जनवरी, 2012

मूल्य :
पाँच रूपये

POSTED AT N.D.PS.O ON 20-1-2012